

## श्रीमंत शंकरदेव के राम

मणि कुमार

रामकाव्य हमारे देश का राष्ट्रीय महाकाव्य है और राम इस देश के महानायक। इस महान चरित्र में वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक आदर्शों का अत्यंत भव्य रूप में प्रतिफलन हुआ है। रामकथा और रामकाव्य के नायक राम के व्यक्तित्व में कितनी ऐतिहासिकता और कितनी कवि कल्पना है, यह कहना बहुत कठिन है। परंतु इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वाल्मीकि के महाकाव्य 'रामायण' में सर्वप्रथम महामानव राम को लोकनायकत्व प्रदान किया। राम का जो गौरवपूर्ण चरित्र जगद्विख्यात है, उसका श्रेय महर्षि वाल्मीकि को ही है। उसके बाद रामकाव्य की परंपरा को जयदेव, कालिदास, कंबन, माधवकन्दली, तुलसीदास आदि अन्य कवियों ने आगे बढ़ाया। उन्होंने वाल्मीकि रामायण की ही कथावस्तु का अपनी-अपनी शैली में उपयोग कर रामोपख्यान प्रस्तुत किए। हिंदी और संस्कृत साहित्य की इस रामकाव्य परंपरा ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को और भी अधिक व्यापक बनाया। राम कथा ने प्रत्येक कवि को प्रभावित किया है। इसलिए आज विश्व की लगभग प्रत्येक भाषा में रामकथा उपलब्ध है। विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं का प्रथम महाकाव्य सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य ग्रंथ प्रायः रामायण ही है। विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं कि, 'कविता रूपी स्त्री के लिए 'राम-नाम' वस्त्र के समान है।'

भारतीय साहित्य में अनादिकाल से ही राम और राम कथा का महत्व मान्य है। रामकथा का मूल स्रोत आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण है। विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं में उसी की कथा के आधार पर सैकड़ों रामायण लिखी गई हैं। आज भी रामकथा विषयक अनेक नई-नई रचनाएं विभिन्न भाषाओं में हो रही हैं।

मध्ययुगीन भारतीय भक्ति आंदोलन में रामकथा और रामचरित को सर्वथा नवीन गति मिली थी। फलस्वरूप राम के ईश्वरत्व के प्रत्यक्षीकरण के लिए अनेक रामायणों की रचनाएं विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हुईं। असमिया और हिंदी भाषाओं की रामकथात्मक रचनाओं का इतिहास मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन इतिहास से किंचित प्राचीन है।

श्री राम मर्यादा शीतल एवं धीरज के शिखर पुरुष कहे जा सकते हैं। एक सभ्य समाज को सदैव ही ऐसे व्यक्ति पसंद आते हैं जो हर प्रकार से लोक हितैषी हो। श्रीराम ऐसे ही लोक नायक हैं जो न केवल पौरुष सौंदर्य से भरपूर हैं बल्कि स्वाभिमान व जनहित के लिए एक समर्थ योद्धा भी हैं। श्रीराम को करुणानिधान भी कह कर पुकारा गया है, वह न केवल मानव जाति बल्कि संसार के सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं। श्रीराम भगवान विष्णु के त्रेता युगीन अवतार माने जाते हैं। श्रीराम भारतीय समाज में इस तरह से व्याप्त हैं कि उनके बिना नैतिकता के समस्त मानदंड अधूरे हैं। श्रीराम का जो रूप जन-जन में लोकप्रिय है, उसे लोगों के अंतस मन में बसाने का काम भक्तिकाल के शिरोमणि कवि एवं

असमिया समाज के महानायक महाकवि शंकरदेव ने बखूबी किया है। शंकरदेव ने अपने 'उत्तरकांड' और 'राम विजय' नाटक में प्रभु श्रीराम के अनेक रूपों का अपनी सरल एवं सरस भाषा में वर्णन कर, उन्हें जन-जन के हृदय में बसा दिया है।

असमिया के जन-जीवन में वैष्णव धर्म को प्रतिष्ठित करने के लिए शंकरदेव ने जिस विपुल साहित्य (नाटक) की सृष्टि की, उस साहित्य से भारतीय भक्ति आंदोलन के साथ असमिया समाज के हृदय का संपर्क अविच्छिन्न रूप से जोड़ दिया। शंकरदेव को असमिया नाट्य साहित्य का जनक माना जाता है। उन्होंने प्रभुत्व भ्रमण और अध्ययन की अभिज्ञता से इस विशेष नाट्य पद्धति का अविष्कार किया, जिससे न केवल पुनर्जागरण का प्रादुर्भाव हुआ, अपितु शंकरदेव के इन प्रयासों से पूर्णता प्राप्त की तथा भारत के सांस्कृतिक मानचित्र में असम को एक निश्चित स्थान प्राप्त हुआ, "शंकरदेव ने न सिर्फ आधा दर्जन के लगभग नाटकों की रचना की और उनके मंचन का अभियान चलाया, बल्कि उसमें स्वयं भाग भी लिया। उन्होंने नाटक को अपने संदेश के प्रचार का माध्यम बनाया और जनजागरण का शंख फूँका।"

महाकवि शंकरदेव वैष्णव संत ही नहीं, अपितु गीत, संगीत, गायन, वादन, नृत्य, नाटक, अभिनय, चित्रकारी आदि विभिन्न ललित कलाओं के अनुपम शिल्पी भी थे। उन्होंने पाखंड, कर्मकांड, अंधविश्वास, जातिभेद, बलिप्रथा और वामाचार में खोए असमवासियों में धर्म की वास्तविक शुचिता, सहजता, करुणा आदि मानवीय गुणों से नवचेतना विकसित करने का क्रांतिकारी कार्य किया। श्री शंकरदेव की सोच की व्यापकता ही तो थी जो आज से पाँच सौ वर्ष पहले उन्होंने भारत को जोड़ने के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता को न केवल समझा, अपितु असमिया, मैथिली आदि भाषाओं को मिश्रित कर एक नई भाषा 'ब्रजबुलि' सृजित कर उसमें अनेक गीत और नाटक लिखे। उन्होंने सहज-सरल गीतों, नाटकों के माध्यम से जनसाधारण के समक्ष अध्यात्म के रहस्य को उद्घाटित किया।

कृष्ण काव्य के पश्चात शांकरि काव्य में विस्तार और उपलब्धि दोनों दृष्टि से सर्वाधिक महत्व राम काव्य का है। रामाख्यान संबंधी शंकरदेव की दो रचनाएँ प्राप्त होती हैं- राम विजय (नाटक) और उत्तरकांड (रामायण)। 'मध्यकालीन हिंदी भक्तिकाव्य में प्रायः सांप्रदायिक संकीर्णता कमोबेश सभी भक्त कवियों में देखने को मिलती है। अपने आराध्य और अपने उपासना मार्ग के प्रति अत्यधिक निष्ठा और इसके सम्प्रदायों के प्रति निंदा एवं उपेक्षा का भाव प्रायः आम बात है। लेकिन शंकरदेव इस अर्थ में विलक्षण हैं कि कृष्ण उपासक होने पर भी वे राम के बारे में भी लिखते हैं। ... शंकरदेव ने असम और पूर्वोत्तर में अकेले वह काम किया जो हिंदी क्षेत्र में रामानंद, वल्लभ, कबीर, सूर, तुलसी आदि के समन्वित प्रयास से संपन्न हुआ।'

रामायण की एक प्रसिद्ध घटना है, परशुराम पर राम की विजय, जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण के बालकांड और अग्निपुराण के पांचवें अध्याय में पाया जाता है। इस (राम-विजय) नाटक का यही स्रोत है। इस नाटक की कथा का मुख्य आधार वाल्मीकि की रामायण का अयोध्याकांड है। मारीच और सुबाहु नाम

के दो राक्षसों का महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में बड़ा उपद्रव था। इसके कारण वे शांतिपूर्ण अपने धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ नहीं कर पाते थे। महर्षि ने अयोध्या नरेश दशरथ के पास जाकर सहायता के लिए राम-लक्ष्मण की माँग की। राजा दशरथ महर्षि की सहायता के लिए राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेज देते हैं। राम-लक्ष्मण राक्षसों का विनाश कर यज्ञ की रक्षा करते हैं। उसके पाश्चात महर्षि अपने साथ राम-लक्ष्मण को राजा जनक की सभा में लेकर जाते हैं जहाँ उनकी पुत्री सीता का स्वयंवर होने वाला है। देश के नाना स्थानों के कितने ही राजकुमार उस सभा में उपस्थित थे। स्वयंवर स्थान पर शिव का विशाल धनुष इस प्रतिज्ञा के साथ रखा गया था कि उपस्थित राजकुमारों में से जो भी इस धनुष पर प्रत्यंजा चढ़ा देगा वही सीता के लिए योग्य सिद्ध होगा।

एक-एक करके सभी एकत्र राजकुमारों का प्रयास असफल सिद्ध होता है। प्रत्यंजा चढ़ाना तो दूर कोई भी इस धनुष को अपनी जगह से हिला भी नहीं पाता है। फिर राम गुरु आज्ञा से इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए जाते हैं। उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती। उन्होंने धनुष को एक ही हाथ से उठा लिया और जैसे ही प्रत्यंजा चढ़ाने के लिए धनुष को झुकाते हैं वो बीच से टूट जाता है। पहले सी ही यह दैवी भविष्यवाणी थी कि सीता का राम के साथ ही विवाह होगा और यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है। धनुष के भंग होने पर सीता ने आगे बढ़कर अपने राम के गले में माला डाल दी। सीता के रूप की प्रशंसा सूत्रधार द्वारा गाए जाने वाले एक उत्कृष्ट 'भातिमा' (भाटिमा) में की गई है-

"कनक शलाका अंगुलि करु शोक,  
बन्दुलि निंद अधर करु कान्ति,  
दाडिम्ब निविड विज दंत पांति,  
इषत हासित मदन मोह जाइ,  
नासा तिलफुल कमलिनि माइ,  
नव यौवन तन बदरि प्रमाण,  
उरु करिकर कटि डम्बरुक थान,  
पद पंकज नव पल्लव भांति,  
चंपक पाखरि अंगुलि करु कान्ति,  
नखचय चारु चंद्र परकाश,  
लहु लहु मत गज गमन विलास,

कर लखनु विहि निर्मल जानि,  
कोकिलनाद अमिया झुरे वाणि ।"

राम की सफलता पर वहाँ एकत्र सभी राजकुमारों के लिए अत्यंत अपमानजनक थी। वे सब मिलकर राम पर आक्रमण कर देते हैं। राम के हाथों उन सभी को पराजित होना पड़ता है। विवाह के बाद राम और सीता अपने परिचारकगण के साथ अयोध्या के लिए चल पड़ते हैं। रास्ते में परशुराम उन पर हमला कर देते हैं, क्योंकि अपने स्वामी शिव के धनुष के तोड़ दिए जाने के कारण राम पर उन्हें बड़ा क्रोध था। यहाँ तक कि क्रोधवश उन्होंने अपने ही कंधों में दांत गड़ा दिए थे। नाटक में अत्यंत आवेगपूर्ण स्थिति की तीव्रता अत्यंत कटु और तीक्ष्ण संवादों द्वारा ही नहीं, सूत्रधार की वर्णात्मक वाणी द्वारा प्रकट किया गया है। राम के पिता राजा दशरथ की सारी अनुनय-विनय कि, "माथे खेर धरो हामाक पुत्र दान देहु" परशुराम के सामने बेकार गई। उनका क्रोध सातवें आसमान पर था। अंत में राम-परशुराम के बीच युद्ध होता है और परशुराम की हार होती है। राम परशुराम को यह दंड भी देते हैं कि तुम्हारे लिए स्वर्ग का रास्ता सदा के लिए बंद कर दिया गया है। "विवेच्य नाटक में विश्वामित्र के साथ उनकी यज्ञ रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण का अयोध्या से जाना, राक्षसों का संहार, ऋषिमुख से सीता सौंदर्य की प्रशंसा, ऋषि के साथ राम-लक्ष्मण का जनकपुर जाना, धनुभंग, सीता राम विवाह, परशुराम का क्रोध, परशुराम की राम से क्षमा याचना और उन्हें राम द्वारा अभयदान दिया जाना वर्णित है। कथावस्तु का आधार है- वाल्मीकि रामायण ही, पर कथा विवरणों में अनेक स्थलों पर पर्याप्त अंतर संभवतः नाटकीय दृष्टि से ही किए गए हैं।"

शंकरदेव के राम कैसे हैं? वे नीतिज्ञ हैं, गुणज हैं, प्रीति नीति दोनों को भली प्रकार निभाना जानते हैं। सेवक सखा बंधु प्रियजनों सभी के प्रति अपने व्यवहार में संतुलित एवं उदार हैं। उनका मन पूरी तरह उनके बस में है। वे धर्मज्ञ, सत्यव्रती प्रजा के हित में सदैव रत रहने वाले, यशस्वी, ज्ञान संपन्न, पवित्र भावों से युक्त, इंद्रियों को वश में और मन को एकाग्र रखने वाले हैं। महाकवि शंकरदेव ने नाटक के आरंभ में श्रीराम की वंदना करते हुए कहते हैं,

"यन्नामाखिल लोकशोकशमनं यन्नाम प्रमास्पदं,

पापापारपयोधी-तारण-विधी यन्नाम पीनल्पवः ।

यन्नाम श्रवणात् पुनाति श्वपचः प्राप्नोति मोक्षं क्षितौ,

तं श्री राममहं महेश वरदं वन्दे सदा सादरम्॥"

जिसका (राम) नाम समस्त सांसारिक संतापों को दूर करने वाला, प्रेम का आस्पद तथा अपार पाप-सागर को पार करने के लिए विशाल नौका है। जिसके नाम-श्रवण से चांडाल भी पवित्र हो जाता है और पृथ्वी पर मोक्ष लाभ प्राप्त करता है। उन महेश वरद भगवान श्रीराम की मैं सदा सादर वंदना करता हूँ। महाकवि शंकरदेव श्रीराम की महिमा का बखान करते हुए उन्हें सदैव कल्याणकारी कहते हैं,

“येनाभाजि धनुः शिवस्य सहसा सीता समाश्वासिता, येनाकारि पराभवो भृगुपतेव्यासक्त रामस्य च।

वैदेज्ञ विधिवद्विवाहमकरोत् निर्जित्य यः पार्थिवान्, युष्माकं वितनोतु शं हि भगवान् श्री रामचन्द्रशिचरम्।।”

जिन्होंने शिव का धनुष अकस्मात् (अनायास) तोड़ डाला और सीता जी को आश्वस्त किया, जिन्होंने परशुराम को पराजित किया, जिन्होंने राजाओं को जीत कर सीता से विधिपूर्वक विवाह किया, वे भगवान श्री रामचंद्र सदा आप लोगों का कल्याण करें।

महाकवि शंकरदेव 'राम विजय' नाटक में राम के सौंदर्य का विस्तार के साथ वर्णन करते हैं। उनके (राम) श्याम शरीर पर पीतांबर शोभायमान है, कमल के समान नेत्र हैं, मुख पर मंद हँसी है। मणिजणित मुकुट सिर पर विराजमान हैं और कानों में कुंडल पहने हुए हैं। गले में सोने का हार मणिमुक्ताओं से जड़े हुए ऐसे शोभायमान हो रहे हैं मानो आकाश में तारे चमक रहे हों। चरणों में मणि निर्मित मंजीर ध्वनित हो रही है,

'श्याम रुचिर चिर पीत परकाश।

पंकज नयन बयन मंदहास।

मणिमय मुकुट कुंडल गंडे डोले।

हेरि मुरुती मन मनमथ भोले।

माणिक मोति ज्योति हेमहारा।

गगन उजोरे जैचन रुचि तारा।

चरणक रंजि मंजिर मनि रोल।'

शंकरदेव राम के सौंदर्य वर्णन के उपरांत नाटककार सीता के सौंदर्य का वर्णन करते हैं। सीता के सिर पर माणिक्य मुकुट है, कानों में कुंडल है। दांतों की शोभा मोतियों की पंक्ति के समान दिखाई पड़ रही है। उनके मृदु हास्य से ज्योत्स्ना का सौंदर्य छिटक रहा है। सीता के रूप को देखकर सारा त्रिभुवन मोहित हो रहा है,

'माणिक मुकुट कुंडल करु कान्ति ।

दशम ओत्तिम नव मोत्तिम पांति।

इसत हासि चांदक रुचि छोर।

नील अलक लोचन चकोर।

कनक केयूर झनकक काय।

रामक चरण चित्तिये चिते लाइ।

पदपंकज मणि मंजिर रोल।

रूपे भूवन भूले शंकरे बोल।'

शंकरदेव के राम धीरोधत, प्रेमी, कर्तव्यनिष्ठ, आदर्श, आज्ञाकारी, वीर, धार्मिक, सत्य-निष्ठ, भातृप्रेम से परिपूर्ण हैं। शंकरदेव के राम ईश्वर होकर भी कर्मवीर मानव अधिक प्रतीत होते हैं। वे परशुराम को ललकारते हुए कहते हैं, 'अये ! दुष्ट द्विजाधम ! क्षत्रिय सब मारि तो हो गरब करैछ ? तोहार माता रेणुकाक काटिए पाप आचरण। सोहि कथा कहिया हामाक भीति देखाव ? रह-रह आजु तहु यमपुर देखब। यत शक्ति थिक हामाक समुख हुआ रह।' श्रीराम के धनुष की टंकार सुनकर परशुराम विकंपित हो उठते हैं और उनके आगे झुककर प्रार्थना करते हैं, 'हे प्रभु श्रीराम, तुम परम ईश्वर, मैं तुम्हारा अंश हूँ। अनजाने मैंने दर्प किया। हमारे अपराध क्षमा कीजिए और हमें प्राण दान दीजिए।'

परशुराम को अभय दान देकर सीता सहित रामचंद्र अयोध्या लौटते हैं। भटिमा के माध्यम से शंकरदेव सीताराम की वंदना करते हैं। इस प्रकार भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है। धर्मदेव तिवारी लिखते हैं कि, 'लीला या रंगमंचीय नाटकों में भी राम आदि पात्र अपनी दिव्यता अलौकिकता को छोड़कर साधारण मानव बने हैं। राम का यह रूप 'राम विजय' के अतिरिक्त असमी नाटकों से प्राप्त नहीं होता है।' हेम बरुआ लिखते हैं कि, 'राम की यह विजय वस्तुतः शैव मत पर वैष्णव मत की प्रतीकात्मक विजय है।' साथ ही परशुराम के लिए स्वर्ग का रास्ता बंद होना संकेत है कि जो वैष्णव धर्म को नहीं मानेगा उसके लिए स्वर्ग का रास्ता हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। इस तरह, 'राम विजय' निर्भीकता और वीरतापूर्ण कृत्यों का, पापात्मा शक्तियों पर पुण्यात्मा शक्तियों की विजय का नाटक है। इस नाटक के केंद्र में राम हैं जो अपने आदर्श चरित्र, धीर प्रकृति और अतुल पराक्रम के लिए विख्यात हैं।

संपर्क : शोधार्थी, हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली